

रंगों और रूपाकारों का उत्सव

वर्षा दास

बचपन में अपने पिता से सुनी हुई प्रार्थना को याद करते हुए हमारे देश के मूर्धन्य चित्रकार, प्राध्यापक केजी सुब्रमण्यन कहते हैं, 'हे ईश्वर, मेरा हर दिन एक पर्व हो, एक उत्सव हो।'

पिछले दिनों कोलकाता के द सीगल फाउंडेशन फॉर द आर्ट्स और दिल्ली के आर्ट हैरिटेज के संयुक्त तत्वावधान में एक अभूतपूर्व प्रदर्शनी का आयोजन हुआ था। प्रदर्शनी का शीर्षक बिल्कुल साधारण था- 'नई कृतियाँ'। ये कृतियाँ थीं केजी की, जो मणि दा के नाम से जाने जाते हैं। नब्बे वर्ष

कला

की आयु में इतनी ताजगी भरी, रंगों के उत्सव जैसी आकृतिपरक कृतियाँ और वह भी इतनी सारी देखकर आनंदपूर्ण अचरज हुआ। दीर्घा की ओर जाते हुए दीवारों पर पशु-पक्षी के श्वेत-श्याम रेखाचित्र थे। स्पष्ट, सुरेख, स्वाभाविक। दीर्घा के भीतर के सारे चित्र दो तरह के थे। एक, पारदर्शक एक्रलिक शीट पर उलटे बनाए गए थे, यानी कलाकार ने जिस बिंब को बाईं ओर बनाया था, उसे दर्शक दाहिनी ओर देखता है। दूसरा प्रकार था बोर्ड पर ग्वाश रंगों से बने चित्रों का। इस प्रकार के अंतर्गत किया गया प्रत्येक चित्र 15 गुणा 15 इंच का था।

एक्रलिक शीट के ऊपर किए गए चित्र दो, तीन, चार, छह जैसे समूहों में प्रदर्शित किए गए थे। जैसे कि एक चित्र का शीर्षक था- 'हनुमान 1 और 2', जिसमें दो अलग-अलग चित्रों को साथ रखा गया था। प्रत्येक चित्र 24 गुणा 36 इंच का खड़ा चित्र था। एक में हनुमान एक हाथ में गदा और दूसरे में औषधियों का पहाड़ लेकर उड़ रहे हैं। पहाड़ की सीध में नीचे



केजी सुब्रमण्यन की एक कलाकृति

हैं पहाड़ के आकार की ही एक अलंकृत आकृति। उसके नीचे एक पशु और हनुमान के पैर के नीचे मुरझाए हुए फूलों का एक फूलदान। दूसरा चित्र है दो बंदरों का। ऊपर का जामुनी चेहरे वाला बंदर छलांग लगा रहा है तो नीचे केसरिया चेहरे वाला थोड़ा बुढ़ाया बंदर दुबक कर बैठा है। वहां भी फूलदान और अन्य बिंब हैं।

विश्वभारती में कला-इतिहास पढ़ा रहे

आर शिवकुमार ने कलाकार से एक प्रश्न पूछा कि 'आप पौराणिक पात्रों के साथ आज के पात्रों का चित्रण करते हैं, जैसे कि बंदर के साथ हनुमान, आज की युवती के साथ दुर्गा। इसे समझाएं? तो उसका उत्तर देते हुए कलाकार कहते हैं कि वे हमेशा वास्तविक और काल्पनिक रूपाकारों के बीच विचरण करते हैं। ये रूपाकार केवल दृश्य आकृतियाँ नहीं हैं। उनका

जटिल व्यक्तित्व है, उनके सांस्कृतिक संदर्भ और उनके पीछे जो कथाएँ हैं, उनमें वैविध्य है। जैसे कि हनुमान के बारे में भी बहुत कुछ है। एक निर्भीक वानर सूर्य को पकड़ने का साहस करता है, जिसके पिता हैं वरुण देव, जिनसे उसे वेग, शक्ति, कद बदलने की क्षमता इत्यादि प्राप्त हुई हैं। बाद में वह राम का भक्त बनता है, उनका दूत भी बनता है। उनका आदेश होने पर औषधियों का पहाड़ उठा ले आता है। एक विनोदप्रिय व्यक्तित्व की भूमिका बदल कर वीर की भूमिका निभाता है।

कलाकार कहते हैं कि मनुष्य के भीतर देव और दानव दोनों का वास है। मनुष्य को चाहिए कि वह इस तथ्य के प्रति सजग रहे। कलाकार के इस दर्शन की जानकारी हो जाने के बाद चित्रों को देखने में और आनंद आता है। इस प्रदर्शनी की सभी कृतियों में स्वतःप्रवर्तित सहजता थी, गतिशील तूलिकाघात थे। प्रतिसाम्य रूपाकारों में भी वर्तमान और पुराण के पात्रों को आमने-सामने रखकर कलाकार पिछले कुछ वर्षों से अपनी इस विशिष्ट शैली की कलाकृतियाँ बना रहे हैं, उस शृंखला में 'नई कृतियाँ' कई मायनों में अपूर्व हैं।

कलाकार कहते हैं कि कला की भाषा का उद्भव प्रत्येक कलाकार में स्वाभाविकता से और स्वेच्छा से होना चाहिए। कलाकार जब अपनी भाषा खोज लेता है तब उसे मुक्ति का आनंद आता है। इस प्रदर्शनी में चित्रों के रंग पहले से अधिक ओजस्वी रहे थे। मणि दा कहते हैं, 'हमारी उम्र बढ़ती है, उसके साथ शायद रंगों की भ्रूष भी बढ़ती है!'

इस प्रदर्शनी के अवसर पर फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित कैटलॉग उसमें छपे चित्रों व प्रा. शिवकुमार और केजी सुब्रमण्यन के बीच हुए संवाद के कारण एक अमूल्य प्रकाशन है।